ई.वी. रामास्वामी 'पेरियार' (1)

पेरियार आधुनिक दक्षिण भारत के जननायक तथा सामाजिक क्रान्तिकारी थे। उनका मूल नाम ई.वी. रामास्वामी नायकर था। उन्हें आदर स्वरूप 'पेरियार' की संज्ञा दी गई जिसका तात्पर्य था – 'महामान्यवर'।

पेरियार का जन्म एक निम्न जाति (नायडू) समाज वाला हिन्दू परिवार में हुआ था। इस कारण उन्हें भेदभाव की पीड़ा सहनी पड़ी। आगे चलकर यही पीड़ा उन्हें सामाजिक अन्याय के प्रति विद्रोह की प्रेरणा दी तथा सामाजिक पुनर्निर्माण की राह दिखाई। उन्होंने सामाजिक जीवन में भेद-भाव का तीव्र विरोध किया। प्रारम्भ में वे इंडियन नेशनल कांग्रेस द्वारा अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए चलाए गए कार्यक्रम से आकर्षित होकर उसके सदस्य बन गए। उन्हें मद्रास प्रेसीडेंसी की कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष भी चुन लिया गया।

वैकम सत्याग्रह पेरियार ने सामाजिक बुराईयों से लड़ने के लिए सत्याग्रह का सहारा लिया। वैकम त्रावणकोर की एक रियासत थी 1924 निम्न जाति के लोगों को मंदिर के पास सड़क पर आना जाना भी वर्जित था इसके विरुद्ध उन्होंने सत्याग्रह शुरु किया।

1925 ई. में पेरियार कांग्रेस से अलग हो गए क्योंकि कांग्रेस के चन्दे से चलने वाला गुरुकुल में गैर-ब्राह्मणों को उच्च जाति के साथ बैठने का अधिकार नहीं था। साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व के मुद्दे पर भी कांग्रेस से मतभेद था। कांग्रेस साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व को समाप्त करना चाहती थी पर पेरियार इसे बनाए रखना चाहते थे।

पेरियार वर्णाश्रम धर्म पर प्रहार किए क्योंकि इस व्यवस्था में स्त्रियों एवं शूद्रों को सबसे निचले श्रेणी में रखा गया था। समाज में स्त्रियों एवं शूद्रों को सामाजिक सम्मान से वंचित रखा गया था। महात्मा गांधी जी वर्णाश्रम धर्म को हिन्दू धर्म का आधार मानते थे। वैसे गांधी जी अन्तर्जातीय विवाह के विरुद्ध नहीं थे। किन्तु पेरियार इस वर्णाश्रम को उच्च जाति द्वारा निम्न जाति का वर्चस्व पर आधारित मानते थे।

समाज सुधार के अभियान को आगे बढ़ाने के लिए 'पेरियार' ने 'आत्मसम्मान आन्दोलन' चलाया। इसका उद्देश्य गैर ब्राह्मणों में द्रविड़ परम्परा पर गर्व का भाव जगाना था। इस आन्दोलन ने गैर ब्राह्मणों के मन में एकता की भावना भरने का प्रयत्न किया। उन्होंने हिन्दू पौराणिक कथाओं का भी खण्डन किया जिनमें ब्राह्मणों की श्रेष्ठता की गाथा थी।

पेरियार ने हिन्दी की शिक्षा को भी अनिवार्य बनाये जाने का विरोध भी किया। उनका मानना था कि हिन्दी की शिक्षा का तात्पर्य था कि संस्कृत का पुनरुत्थान, जिसका वे विरोध कर रहे थे। पेरियार ने मातृभाषा को आर्य भाषा से

विचारों का आवाहन किया।

पेरियार एवं उनके सहयोगियों ने आर्य जाति हिन्दू धर्म और ब्राह्मणवाद के प्रति इस हद तक विरोध प्रकट किया कि उन्होंने मुस्लिम लीग के नेता मुहम्मद के द्विराष्ट्र सिद्धांत को उचित ठहराया और इसी तर्ज पर 'द्राविड़िस्तान' की मांग उठाई।

पेरियार ने तमिल समाज को आत्मसम्मान और समाज-सुधार का रास्ता दिखाया। जाति प्रथा पर भी कुठाराघात किया।

वास्तव में 'पेरियार' कोई राजनीतिक चिंतक नहीं बल्कि एक कुशल और लोकप्रिय राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने सामाजिक अन्याय के प्रति जो तेवर अपनाया वह उनके अनुयायियों के लिए अनुकरणीय था। उन्होंने दक्षिण भारत की दलित जातियों को उनके प्राचीन गौरव की याद दिलाई ताकि उनका मनोबल ऊँचा उठ सके। उन्होंने आत्मसम्मान पूर्वक जीने की शिक्षा दी और उनमें अस्मिता (Identity) की भावना को बढ़ावा दिया।

अस्मिता वह स्थिति है जब कोई व्यक्ति या समूह यह महसूस करता है कि उसकी कुछ विशेषताएँ हैं जो उसे समाज में एक अलग पहचान स्थापित करने में मदद करती हैं।

उन्होंने सामाजिक अन्याय से लड़ने में मौलिक दृष्टिकोण अपनाया।

अरस्तु ने 'सद्गुण' के आधार पर दास-प्रथा का समर्थन किया। कालान्तर में उनकी स्थिति में परिवर्तन आया, वह उत्पादन-प्रणाली में परिवर्तन के साथ सामंतवाद की शुरुआत से आया। पुनः आधुनिक युग में यूरोपीय साम्राज्यवाद के दौर में 'श्वेत जाति के भार' का सिद्धांत आया। इसका तात्पर्य है कि श्वेत जाति सभ्य और सुसंस्कृत है। जब एशिया एवं अफ्रीका के लोगों में राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ; उनमें स्वाधीनता की आकांक्षा जगी तो उन्होंने 'श्वेत जाति के भार' की परिकल्पना को चुनौती दी।

अर्थात् शोषित वर्ग अपनी अस्मिता के प्रति सजग होकर तथा हीन भावना से मुक्त होकर शोषक वर्ग के प्रति विरोध का साहस पैदा होता है। अतः पेरियार ने भी इसी तर्ज पर ही द्रविड़ों में भी उच्च जाति के प्रति विरोध की भावना जगाई।

दूसरी ओर, हिन्दू समुदाय में अनेक समाज-सुधारकों ने दलित जातियों की दुर्दशा पर गहरी चिंता जताई। जैसे पंद्रहवीं शताब्दी में कबीर, बीसवीं शताब्दी में महात्मा गांधी ने इस अन्याय के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। उनका मानना था कि ऊँची जातियों में नैतिक भावना जगाकर अस्पृश्यों के प्रति सम्मान की भावना जगाई जा सकती है।

पुनः डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने दलितों के उत्थान के लिए हिन्दू वर्ण व्यवस्था को समाप्त करने का सुझाव दिया। उनका मानना था कि जाति-प्रथा का अन्त के बिना सामाजिक समानता असम्भव है। डॉ. अम्बेडकर दलितों के उत्थान के लिए लड़ने वाले नेतृत्व भी दलितों के बीच का ही होना चाहिए ताकि वह स्वयं उस पीड़ा को अनुभव कर पाये। डॉ. अम्बेडकर का यह विचार एक तरह से दलितों की अस्मिता को जगाने का प्रयत्न था। राजनीति में तथा सरकारी नौकरियों में स्थान सुरक्षित रखने की भी मांग की थी।

~~पेरियम~~ पेरियार ने भी डॉ. अम्बेडकर की तरह हिन्दू धर्म पर तीव्र प्रहार किया। उन्होंने दक्षिण भारत में दलित जातियों को संगठित किया तथा नई अस्मिता बनाने के लिए प्रेरित किया। उन लोगों में स्वाभिमान तथा आत्मसम्मान की भावना जाग्रत किया। भारतीय सन्दर्भ में सामाजिक अन्याय से लड़ने के लिए पेरियार का कदम अत्यन्त मौलिक था। प्रसिद्ध तमिल कवि सुब्रह्मण्य भारती की तरह उन्होंने जाति, पंथ, और सम्प्रदाय पर तीव्र व्यंग्य किया। उन्होंने तमिल लिपि में भी विस्तृत सुधार किया। उनकी संशोधित लिपि विस्तृत रूप से स्वीकार कर ली गई। उन्होंने एक ऐसे राज्य की कल्पना करना चाहा जहाँ छुआ-छूत का कोई स्थान नहीं। उनका 'एक गैर-ब्राह्मण पहचान वाला राष्ट्र' रूपी स्वप्न, एक आदर्श स्वप्न बन गया।

पेरियार जैसे निडर, ऊर्जायुक्त व्यक्ति, गैर ब्राह्मणों के लिए हिन्दू धर्म की परम्परागत सदियों, पुरानी धार्मिक सिद्धान्तों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए, निरन्तर प्रेरणा स्रोत रहेंगे।

—